"मोमन"

- "मुसलमान कहावणु मुसकलु जा होई ता मुसलमाणु कहावै ।अवलि अउलि दीनु करि मिठा मसकल माना मालु मुसावै ।होई मुसलिमु दीन मुहाणै मरण जीवण का भरमु चुकावै। रब की रजाई मने सिर उपरि करता मने आपु गवावै। तउ नानक सरब जीआ मिहरमति होई त मुसलमाणु कहावै ।"

(4-141)

- "रोजा धरै निवाज गुजारै कलमा भिसति न होई । सतरि काबा घट ही भीतरि जे करि जानै कोई । निवाज सोई जो निआउ बिचारै कलमा अकलहि जानै । पाचहु मुसि मुसला बिछावै तब तउ दीनु पछानै । खसमु पछानि तरस करि जीअ महि मारि मणी करि फीकी । आपु जनाई अवर कउ जानै तब होई भिसत सरीकी ।" कबीर 480
- "बेद कतेब इफतरा भाई दिलका फिकरु न जाई । टुकु दमु करारी जउ करहु हाजिर हजूरि खुदाई ।1। बदे खोज दिल हर रोज ना फिरु परेसानी माहि । इहि जु दुनिआ सिहरु मेला दसतगीरी नाहि ।1। रहाउ । दरोगु पढ़ि पढ़ि खुसी होई बेखबर बादु बकाहि । हकु सचु खालकु खलक मिआने सिआम मूरति नाहि ।2। असमान म्याने लहंग दरीआ गुसल करदन बूद । करि फकरु दाइम लाइ चसमे जह तहा मउजूदु ।3। अलाह पाकं पाक है सक करउ जे दूसर होई । कबीर करमु करीम का उहु करै जानै सोई ।4।" (727)
- "कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि साईं न बहरा होई । जा कारनि तू बांग देहि दिल ही भीतरि जोई । सेख सबूरी बाहरा किआ हज काबे जाई । कबीर जा की दिल साबित नही ता कउ कहाँ खुदाई । कबीर अलह की करि बंदगी जिह सिमरत दुखु जाई । दिल महि साईं परगटै बुझै बलंती नाईं ।" (1374)

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक